2. सामाजिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता Need of Guidance form social point of view

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह जिस समाज में जन्म लेता है उसी समाज में उसे समायोजन करना पड़ता है। तभी वह सामाजिक रूप से स्वीकार्य होता है। आज के परिवर्तनशील युग में मनुष्य की बहुत सी सामाजिक आवश्यकताएँ हैं। अतः उसे उचित दिशा प्रदान करने के लिए निर्देशन को देने की आवश्यकता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा तो कई ऐसे सामाजिक पक्ष हैं जिनमें उसे निर्देशन देने की आवश्यकता है जिनमें से कुछ पक्षों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

(i) यांत्रिक सभ्यता के विकास के कारण . Due To the Machinery civilization.

आज का समय यांत्रिक-सभ्यता का समय है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मशीनों एवं यंत्रों का प्रयोग दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा है। इसका कारण औद्योगिकीयकरण है। औद्योगिकीयकरण के कारण मनुष्य के पास समय की अधिकता भी हो गई है इस यांत्रिक युग में मनुष्य को अपने समायोजन तथा समय के उपयोग के बारे में निर्देशन की आवश्यकता रहती है। कारखानों में नई-2 विकसित तथा तकनीकों को समझने के लिए भी निर्देशन चाहिए।

(ii) परिवार की बदलती परिस्थितियाँ Changing Conditions of the Family →

प्राचीन काल में संयुक्त परिवारों की ही प्रथा चली आ रही थी, लेकिन आजाद होने के पश्चात परिवार की इन परिस्थितियों में बहुत तेजी से परिवर्तन आने लगा। आज भारत में संयुक्त परिवारों

का स्वरूप ही बदल चुका है। इस स्वरूप के बदलने का मुख्य कारण बेरोजगारी, जनसंख्या के वृद्धि, औद्योगिकी इत्यादि। रोजगार की तलाश में लोग शहरों की ओर भाग रहे है। अपनी आर्थिक दुर्बलताओं के कारण परिवारों में रिश्ते टूट रहे है। परिवार के सदस्य अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए संयुक्त परिवार को छोड़ कर दूर होते जा रहे है। इससे परिवारों में तनाव भी बढ़ रहे।

(iii) स्त्रियों के व्यवसायिक समायोजन के लिए - For Vocational Adjustment Women

वर्तमान काल में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों में महिलाओं की सामाजिक, पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन को बहुत महत्व दिया जा रहा है। इन परिवर्तनों ने सिद्ध कर दिया है कि स्त्रियां केवल घर के काम के लिए नहीं होती है। स्त्रियां जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य की भांति कार्य कर रही है। बल्कि कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से आगे भी निकल चुकी है और अपनी आर्थिक और सामाजिक पारिवारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए स्त्रियां विभिन्न व्यवसायों में प्रवेश कर रही है। ऐसी अवस्था में स्त्रियों को भी निर्देशन की आवश्यकता अनुभव होती है।

(iv) जनसंख्या वृद्धि के कारण - Due To population Explosion

विश्व में कई देश जनसंख्या वृद्धि के प्रकोप से बच नहीं सके। भारत भी उनमें से एक ऐसा देश है। यहाँ पर जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। इस वृद्धि के कारण देश की कई परियोजनाएं असंतुलित होकर रह गई। जनसंख्या को बढ़ने से रोकने के लिए व्यक्तियों को जागरूक करना आवश्यक है। इस कार्य में निर्देशन-सेवा प्रोग्राम महत्वपूर्ण हो सकता है।

Scanned with CamScanner

02/2020

Monday	–	3	10	17	24	
Tuesday	–	4	11	18	25	
Wednesday	–	5	12	19	26	
Thursday	–	6	13	20	27	
Friday	–	7	14	21	28	
Saturday	1	8	15	22	29	
Sunday	2	9	16	23	–	

JANUARY '20

Wk-03 Day 019-347 SUNDAY 19

3. शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता - Need of Guidance form the stand point of Education → शिक्षा सबके लिए और सब शिक्षा के लिए है इस विचार के अनुसार प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। लेकिन इसके साथ यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक बालक को उसकी योग्यता एवं बुद्धि के आधार पर शिक्षित किया जाए। यह कार्य निर्देशन द्वारा ही सम्भव है।
शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता निम्न प्रकार से है।

(i) अपव्यय व अवरोधन की समस्या के समाधान के लिए -

भारतीय शिक्षा जगत में एक बहुत बड़ी समस्या अपव्यय से सम्बन्धित है। यही अनेक छात्र शिक्षा स्तर को पूर्व किये बिना ही विद्यालय छोड़ देते है। इस प्रकार उन बालक की शिक्षा पर किया जाने वाला धन व्यर्थ हो जाता है। इस प्रकार की समस्या अवरोधन की है। अनेक छात्र एक कक्षा में कई वर्षो तक फेल होते रहते है। गलत पाठ्यक्रम के चुनाव, बुरे छात्रों की संगति या पारिवारिक कारणों से अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या उत्पन्न होती है निर्देशन - सेवा इन कारणों का निदान करके इस समस्या के समाधान में योगदान कर सकती है।

(ii) सम्बन्धित पाठ्यक्रम का चयन → वर्तमान काल में कई नए - नए विषयों का प्रसार हुआ है। इन विषयों को कई विद्यालयों में पढ़ाया भी जाता है। लेकिन सभी छात्रों की रुचि तथा योग्यता इन विषयों को पढ़ने के लिए नहीं होती। इसका मुख्य कारण छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता होती है।

notes
Phone
email
website

Scanned with CamScanner

अतः व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर पाठ्यक्रम का चुनाव किया जाना चाहिए। इस कार्य में निर्देशन अत्यधिक सहायक हो सकता है। पाठ्यक्रम के चुनाव के लिए निर्देशन हेतु मनोविज्ञान में अनेक प्रमापीकृत परीक्षणों (standardised Tests) का प्रयोग किया जाता है। इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर विद्यार्थी को पाठ्यक्रम चयन में सहायता दी जाती है।

(iii) व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में (To provide Education According To Individual Differences) →

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। निर्देशन की आवश्यकता व्यक्तिगत भिन्नताओं, योग्यताओं, रुचियों इत्यादि को ध्यान में रखते हुए उन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिये होती है। समाज की आवश्यकता एवं संरचना भिन्नता में एकता की है। ऐसे में व्यक्ति में निहित सकारात्मक एवं नकारात्मक गुणों को पहचान कर उन्हें परिवार समाज और राष्ट्र की धारा पर उचित रूप देने से है ताकि सम्पूर्ण आकृति अर्थ एवं व्यक्तित्व के रूप में उभर कर आये।